DAINIK BHASKAR (08.10.2016)

सरस्वती पुनरुद्धार परियोजना से प्रदेश में वैज्ञानिक शोध को मिलेगा बढ़ावा: प्रशांत

परियोजना के विभिन्न विषयों में शोध की अपार संभावनाएं, शोध से जुड़ेंगे विदेशी विश्वविद्यालय

भास्कर न्यूज | फरीदाबाद

हरियाणा में सरस्वती पुनरुद्धार परियोजना के तहत एक व्यापक अनुसंधान योजना पर कार्य किया जा रहा है। इसमें राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर की शोध संस्थाओं और विश्वविद्यालयों को परियोजना के अंतर्गत पुरातत्व, पर्यावरण अध्ययन, जलवायु बदलाव, नदी प्रौद्योगिकी, जल संचयन, सिंचाई और बाढ़ प्रबंधन जैसे विषय पर शोध करने के लिए आमंत्रित किया जाएगा। यह जानकारी हरियाणा सरस्वती धरोहर विकास बोर्ड के उपाध्यक्ष प्रशांत भारद्वाज ने शुक्रवार को वाईएमसीए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में सरस्वती की कहानी विज्ञान की जुबानी विषय पर आयोजित संगोष्ठी में दी। इस मौके पर बल्लभगढ़ के विधायक पं. मूलचंद शर्मा मुख्य अतिथि थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. दिनेश कुमार ने की। इस दौरान कुलसचिव डा. संजय कुमार शर्मा भी मौजूद थे।

फरीदाबाद. वाईएमसीए कॉलेज में कार्यक्रम का दीप जलाकर शुभारंभ करते अतिथि।

ऑस्ट्रेलिया ने की सीएम से मदद की पेशकश

भारद्वाज ने कहा कि परियोजना के अंतर्गत विभिन्न विषयों में शोध की अपार संभावनाएं हैं। इसमें विश्वविद्यालयों की अहम भूमिका रहेगी। हाल में ऑस्ट्रेलियाई प्रतिनिधिमंडल की मुख्यमंत्री मनोहर लाल से मुलाकात का जिक्र करते हुए भारद्वाज ने बताया कि सरस्वती नदी के पुनरुद्धार में ऑस्ट्रेलिया ने मदद की पेशकश की है। इसमें सरस्वती के प्रवाह के साथ-साथ नदियों की सफाई पर कार्य किया जा सकता है। सरकार की कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में सरस्वती नदी पर अनुसंधान केन्द्र स्थापित करने की भी योजना है। इसी प्रकार जींद के निकट राखीगढ़ी में दक्षिण कोरियाई विश्वविद्यालय द्वारा हड़प्पा कालीन सभ्यता के पुरातत्वीय शोध पर कार्य चल रहा है। इसके अलावा जापान व ऑस्ट्रिया से भी सरस्वती परियोजना से जुड़े विषयों पर शोध को लेकर बातचीत चल रही है। उन्होंने कहा राज्य सरकार सरस्वती परियोजना को वैज्ञानिक शोध और पर्यटन के अवसरों के रूप में देख रही है।

फरवरी में सरस्वती महोत्सव

भारद्वाज ने बताया कि हरियाणा प्रदेश के गठन के स्वर्ण जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रमों के अंतर्गत फरवरी 2017 में राष्ट्रीय सरस्वती महोत्सव का आयोजन करने जा रही है। इसमें लगभग 20 देशों से वैज्ञानिकों को आमंत्रित किया जा रहा है। इसके अलावा प्रदेश के प्रतिष्ठित अनुसंधान संस्थानों और विश्वविद्यालयों से भी वैज्ञानिक हिस्सा लेंगे। उन्होंने बताया वर्ष 2018 में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सरस्वती महोत्सव का आयोजन किया जाएगा। सरस्वती धरोहर परियोजना को लेकर केन्द्र सरकार द्वारा गठित सात राज्यों की समन्वय समिति सरस्वती पुनरुद्धार के साथ-साथ इसमें पर्यटन की संभावनाएं भी तलाश रही है।

4000 वर्ष पुरानी सभ्यता की परिचायक नदी

सरस्वती नदी को लेकर वैज्ञानिक एवं भूगर्भीय खोजों को तथ्य के साथ प्रस्तुत करते हुए भारद्वाज ने बताया कि सरस्वती पुनरुद्धार परियोजना केवल एक नदी तक सीमित नहीं है। अपितु एक 4000 वर्ष पुरानी सभ्यता की परिचायक है। जो अपने साथ समृद्ध सभ्यता समेटे हुए है। उन्होंने कहा वैज्ञानिक शोधों एवं सेटेलाइट चित्रों की मदद से यह सिद्ध हो चुका है कि सरस्वती एक पौराणिक धारणा नहीं बल्कि एक विलुप्त नदी है और इसका हड़प्पा व सिंधु सभ्यता के निर्माण में बड़ा योगदान था।

सरस्वती पुनरुद्धार परियोजना में शोध के अवसर

विधायक मूलचंद शर्मा ने हरियाणा को यमुना और सरस्वती नदियों का प्रदेश बताया। उन्होंने कहा सरकार द्वारा फरीदाबाद शहर में लोगों को यमुना नदी से पेयजल आपूर्ति के लिए प्रयास किए जा रहे हैं और वर्ष 2019 तक शहर की सड़क और सीवरेज की समस्या का पूर्ण रूप से निदान कर दिया जाएगा। इससे पूर्व स्वागत भाषण में कुलपति प्रो. दिनेश कुमार ने सरस्वती को सभ्यता, संस्कृति और विज्ञान से जुड़ा विषय बताया। कार्यक्रम के अंत में निदेशक युवा कल्याण डा. प्रदीप डिमरी ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा। संगोष्ठी का संयोजन पर्यावरण विज्ञान की सहायक प्रोफेसर डॉ. रेणुका गुप्ता ने किया।

DAINIK JAGRAN (08.10.2016)

वाइएमसीए विवि में विद्यार्थियों को जिम की सुविधा

- कुलपति प्रो. दिनेश कुमार ने छात्रावास में किया जिम का शुभारंभ

विश्वविद्यालय में स्थापित जिम में व्यायाम करते हुए विद्यार्थी। जागरण

जासं, फरीदाबाद : विद्यार्थियों में स्वास्थ्य की ओर रुझान बढ़ाने के उद्देश्य से वाइएमसीए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय की ओर से छात्रावास में आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित एक जिम तैयार किया गया है। छात्रावास में स्थापित जिम का शुभारंभ कुलपति प्रो. दिनेश कुमार ने किया।

विद्यार्थियों की दैनिक व्यायाम की जरूरतों को पूरा करने के लिए जिम में लगभग 5 लाख रुपये की लागत से मल्टी जिम, रिकम्बेंट बाइक, ट्विस्टर, एबडोमिनल बोर्ड, ओलंपिक फ्लैट बैंच, स्क्वैट स्टैड, बटरफ्लाई मशीन, लेग एक्सटेंशन व लेग कर्लिंग, लेट पुल डाउन व हाई पुली जैसे उपकरण उपलब्ध करवाए गए है। विद्यार्थियों के लिए यह सुविधा निश्शुल्क रहेगी। कुलपति प्रो. दिनेश कुमार ने कहा कि आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित जिम की सुविधाओं से विद्यार्थियों के फिटनेस में सुधार होगा। उन्होंने विद्यार्थियों को सुविधा का लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया।

इस अवसर पर संकायाध्यक्ष (संस्थान) प्रो. संदीप ग्रोवर, प्रो, तिलक राज, डॉ. मुनीष वशिष्ठ, मुख्य छात्रपाल डॉ. विकास तुर्क, प्रशिक्षण एवं स्थानन अधिकारी डॉ. विक्रम सिंह, अतिरिक्त मुख्य छात्रपाल सुरेंद्र सिंह, सुरेश कुमार, आशीष पाल तथा मनमोहन कक्कड़ उपस्थित थे।

AMAR UJALA (08.10.2016)

सरस्वती परियोजना से वैज्ञानिक शोध को मिलेगा बढ़ावा

फरीदाबाद (ब्यूरो)। सरस्वती पुनरुद्धार परियोजना से राज्य में वैज्ञानिक शोध को बढ़ावा मिलेगा। परियोजना से विभिन्न विषयों में शोध की अपार संभावनाएं है, जिसमें विश्वविद्यालयों की अहम भूमिका रहेगी। यह बात हरियाणा सरस्वती धरोहर विकास बोर्ड के उपाध्यक्ष प्रशांत भारद्वाज ने वाईएमसीए में आयोजित सेमिनार के दौरान कही। मुख्य अतिथि विधायक मूलचंद शर्मा थे। भारद्वाज ने बताया कि सरस्वती नदी के लिए आस्ट्रेलिया ने मदद की पेशकश की है।

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में अनुसंधान केंद्र स्थापित करने की योजना है। जींद के दक्षिण कोरियाई विश्वविद्यालय द्वारा हडप्पा कालीन सभ्यता के पुरातत्वीय शोध पर कार्य चल रहा है। जापान व ऑस्ट्रिया से भी सरस्वती परियोजना से जुड़े विषयों पर शोध की बातचीत चल रही है। कुलसचिव डॉ संजय कुमार शर्मा भी उपस्थित थे। उन्होंने बताया कि हरियाणा प्रदेश फरवरी, 2017 में राष्ट्रीय सरस्वती महोत्सव का आयोजन करने जा रही है। सरस्वती धरोहर परियोजना को लेकर केन्द्र सरकार द्वारा गठित सात राज्यों की समन्वय समिति सरस्वती पुनरुद्धार के साथ पर्यटन की संभावनाएं तलाश रही है।

PUNJAB KESARI (08.10.2016)

प्रदेश में वैज्ञानिक शोध को मिलेगा बढ़ावा: भारद्वाज

वाईएमसीए यूनिवर्सिटी में हरियाणा सरस्वती धरोहर विकास बोर्ड के उपाध्यक्ष प्रशांत भारद्वाज को पौधा भेंट करते हुए।

फरीदाबाद, 7 अक्तूबर (सूरजमल): हरियाणा में सरस्वती पुनरुद्धार परियोजना के तहत एक व्यापक अनुसंधान योजना पर कार्य किया जा रहा है, जिसके राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर की शोध संस्थाओं और विश्वविद्यालयों को परियोजना के अंतर्गत पुरातत्व, पर्यावरण अध्ययन, जलवायु बदलाव, नदी प्रौद्योगिकी, जल संचयन, सिंचाई और बाढ़ प्रबंधन जैसे विषय पर शोध करने के लिए आमंत्रित किया जाएगा।

यह जानकारी हरियाणा सरस्वती धरोहर विकास बोर्ड के उपाध्यक्ष प्रशांत भारद्वाज ने आज वाईएमसीए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय फरीदाबाद में 'सरस्वती की कहानी विज्ञान की जुबानी' विषय पर आयोजित एक दिवसीय संगोष्ठी को संबोधित करते हुए दी। इस अवसर पर बल्लभगढ़ से विधायक मूलचंद शर्मा मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. दिनेश कुमार ने की। इस अवसर पर कुलसचिव डा. संजय कुमार शर्मा भी उपस्थित थे।

भारद्वाज ने कहा कि परियोजना के अंतर्गत विभिन्न विषयों में शोध की अपार संभावनाएं हैं, जिसमें विश्वविद्यालयों की अहम भूमिका रहेगी। हाल में आस्ट्रेलियाई प्रतिनिधिमंडल की मुख्यमंत्री मनोहर लाल से मुलाकात का जिक्र करते हुए श्री भारद्वाज ने बताया कि सरस्वती नदी के पुनरुद्धार में आस्ट्रेलिया ने मदद की पेशकश की है, जिसमें सरस्वती के प्रवाह के साथ-साथ नदियों की सफाई पर कार्य किया जा सकता है। सरकार की कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय में सरस्वती नदी पर अनुसंधान केन्द्र स्थापित करने की भी योजना है। इसी प्रकार, जींद के निकट राखीगढ़ी में दक्षिण कोरियाई विश्वविद्यालय द्वारा हडप्पा कालीन सभ्यता के पुरातत्वीय शोध पर कार्य चल रहा है।

इसके अलावा, जापान व ऑस्ट्रिया से भी सरस्वती परियोजना से जुड़े विषयों पर शोध को लेकर बातचीत चल रही है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार सरस्वती परियोजना को वैज्ञानिक शोध और पर्यटन के अवसरों के रूप में देख रही है और आने वाले दिनों में इसके सकारात्मक परिणाम देखने को मिलेंगे।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए विधायक मूलचंद शर्मा ने हरियाणा को यमुना और सरस्वती नदियों का प्रदेश बताया।

उन्होंने कहा कि सरकार द्वारा फरीदाबाद शहर में लोगों को यमुना नदी से पेयजल आपूर्ति के लिए प्रयास किए जा रहे है और वर्ष 2018 तक शहर की सड़क और सीवरेज की समस्या का पूर्ण रूप से निदान कर दिया जायेगा। कार्यक्रम के अंत में निदेशक, युवा कल्याण डॉ प्रदीप डिमरी ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा। संगोष्ठी का संयोजन पर्यावरण विज्ञान की सहायक प्रोफेसर डॉ. रेनूका गुप्ता ने किया।

HINDUSTAN TIMES (08.10.2016)

Australia and Japan interested in research on Saraswati river

HT Correspondent
letterschd@hindustantimes.com

AUSTRALIA HAS ALREADY OFFERED ITS SUPPORT FOR HARYANA GOVT'S SARASWATI REJUVENATION PROJECT, SAYS OFFICIAL

CHANDIGARH: Australia and Japan have shown interest in Haryana's Saraswati rejuvenation project and talks were on with these countries regarding research on subjects related to the project.

This was stated by deputy chairman, Haryana Saraswati Heritage Development Board (HSHDB), Prashant Bhardwaj on Friday.

Stating that Australia had already offered its support for the project, he said that a 'Rashtriya Saraswati Mahotsav' would be organised in February 2017 as a part of the golden jubilee celebrations of Haryana.

He said scientists from about 20 countries and experts from renowned research institutes and universities in the state would take part in the festival.

Bhardwaj said the state government had a plan to set up a centre of research on Saraswati river at Kurukshetra University and an extensive project was in progress under which research institutes of national and international repute and universities would be invited to conduct research on subjects like archaeology, environmental studies, climate change, river technology, water conservation, irrigation and flood control management.

He said the coordination committee of seven districts on Saraswati heritage project constituted by the Centre was exploring possibilities in tourism sector, besides rejuvenation of Saraswati river which also included developing tourism corridor from Bandipur glacier to Kutch.

INDIAN EXPRESS (08.10.2016)

Saraswati project draws attention of Australia, Japan

Chandigarh: The Haryana government Friday said the project to revive Saraswati river has drawn attention of Australia and Japan and talks are on with them regarding research on subject.

In an official release, the Haryana Saraswati Heritage Development Board's president Prashant Bhardwaj said a delegation from Australia has offered its support in rejuvenation of the river during a recent meeting with CM Manohar Lal Khattar.

He also said work on archaeological research of Harappan civilisation is underway by a South Korean university at Rakhigarhi near Jind.

With a view to generate awareness about the river, seminars are also being organised at college and university level. Bharadwaj said "Rashtriya Saraswati Mahotsav" will be organised in February 2017. PTI

The Indian EXPRESS epaper edition

THE PIONEER (08.10.2016)

Saraswati rejuvenation project draws attention of Australia, Japan

PNS ■ CHANDIGARH

Haryana Government's ambitious river Saraswati rejuvenation project has drawn the attention of Governments of Australia and Japan.

While Australia has already offered its support for this project, talks are on with Japan and also, Australia regarding research on subjects related to Saraswati project, said Prashant Bhardwaj, deputy chairman, Haryana Saraswati Heritage Development Board (HSHDB).

He said that "Rashtriya Saraswati Mahotsav" will be organized in February 2017 as a part of the golden jubilee celebrations of the formation of Haryana.

During this festival, scientists from about 20 countries would be invited. Also, scientists of renowned research institutes and universities of the state would take part in the festival, said he.

Bhardwaj said that Saraswati Mahotsav would be organized at international level in the year 2018.

He said that the State Government has a plan to set up a Centre of Research on river Saraswati in Kurukshetra University. The State Government has already approved an amount of Rs 20 lakh for the establishment of research centre.

To generate awareness about river Saraswati, seminars were also being organized at college and university level. Also, work on an extensive research project is in progress under which research institutes of national and international repute and universities would be invited to conduct research on subjects like archeology, environmental studies, climate change, river technology, water conservation, irrigation and flood control management, said he.

While referring to a recent meeting of an Australian delegation with Chief Minister Manohar Lal, he said that Australia has offered its support in rejuvenation of river Saraswati.

The BJP led Haryana Government had in 2015 decided to restore Saraswati creek from Adi Badri to Mustafabad in Yamunanagar district and set up Adi Badri Heritage Board.

The Saraswati river, considered sacred in Hindu religion, finds mention in ancient Hindu scriptures like the Rig Veda, Mahabharata, Ramayana and others, giving credence to the belief that it existed during those times.